International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 08-02-2021, Accepted: 07-03-2021, Published: 16-04-2021
Volume 3, Issue 2, 2021, Page No. 07-10

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में सदाचार और चढ़दी कला का स्वरूप

रमनदीप कौर
पी.एच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पंजाब, भारत

सारांश

साहित्य समाज को दिशा-निर्देश देता है, साहित्य मनुष्य को सही-गलत और उचित-अनुचित के बारे में बताता है। युग परिवर्तन होने के साथ-साथ साहित्य भी परिवर्तित होता रहा। मध्यकाल में परिस्थितियाँ उथल-पुथल से भरी थीं, इस समय हिन्दू-मुस्लिम को लेकर बहुत विवाद होने लगे, जिस कारण लोग हताश और निराश हो गए थे। लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए कई सन्त-महात्मा हुए जिन्होंने अपनी वाणी द्वारा मानव जाति को उचित रास्ते पर चलने और परिस्थितियों का सामना करने को कहा। मध्यकाल में जो सन्त कवि हुए उन्होंने जो काव्य लिखा इसमें बुराई की प्रताड़ना की गई और अच्छाई के रास्ते पर चलने का उपदेश दिया। लोगों में झूठ, चोरी, हिंसा इत्यादि कई प्रकार की अमानवीय क्रियाएं फैली हुई थी, जो सन्त-महात्मा हुए उन्होंने लोगों को सत्य, ईमानदारी, अहिंसा, नम्रता, मानवता का पाठ पढ़ाया। सन्तों द्वारा सदाचार की बात करते हुए मनुष्य के व्यवहार को लेकर जो उपदेश दिए गए उन पर हम विचार और उन्हें जीवन में धारण करने की आवश्यकता है। मानव को अपना व्यवहार, आचरण शुध्द रखना चाहिए तभी वह परमात्मा के नाम का जाप कर मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। आज भी यह कहा जाता है कि जिस प्रकार का व्यवहार हम चाहते हैं कि लोग हमसे करें तो हमें भी दूसरों से उसी प्रकार का व्यवहार करना चाहिए। मानवता का पाठ गुरुओं ने हमें पढ़ाया, गुरु ग्रन्थ साहिब में जितने भी गुरुओं की वाणी है उनमें हमें सदाचारपूर्ण जीवन जीने का उपदेश दिया गया है। गुरबाणी समस्त मानव जाति का मार्गदर्शन करती है, सदाचार की पालना करते हुए हमें चढ़दी कला में रहने का उपदेश भी देती है। 'चढ़दी कला' का अर्थ है साकारात्मक सोच को धारण करना अर्थात जीवन में कितनी भी मुश्किलों का सामना करना पड़े कभी भी अपने आप को निराश नहीं होने देना, भगवान् का नाम लेते रहो और अपना कर्म करो। प्रत्येक प्राणी को अपने जीवन में बहुत से मुश्किल हालातों से गुजरना पड़ता है, पर समय अच्छा-बुरा कोई भी हो कभी भी ठहरता नहीं गुजर ही जाता है तो गुरबाणी हमें यही संदेश देती है कि प्रतिकुल परिस्थितियों में भी धैर्य और संयम रखते हुए, परमात्मा का जाप करते हुए सदैव चढ़दी कला में रहना चाहिए।

मूल शब्द: श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, सन्त, समाज, सदाचार, मानवता, चढ़दी कला

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति की धारणा है की जब भी सामाजिक परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो जाती हैं, अच्छाई का अन्त और बुराई ज्यादा बढ़ने लगती है तो ईश्वर अपनी शक्तियों से मंडित कर किसी महापुरुष को धरती पर बुराई का अन्त करने के लिए भेजता है। श्रीमद्भगवदगीता में भी यह स्पष्ट किया गया है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्म-संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।[1]

जन-मानस त्राहिमाम् पुकार रहा था। अत्याचार, क्रूरता, अनाचार, अन्धकार से परेशान लोगों को प्रकाश रेखा की उत्कंठा थी। जब-जब अधर्म का प्रसार होने लगता है तब-तब परमात्मा एक नेक आत्मा को पृथ्वी पर भेजता है जो लोगों का मार्गदर्शन कर उन्हें उचित मार्ग पर लेकर आती है ऐसा ही कुछ मध्यकाल में हुआ, "मुगलकालीन भारत में जब कि उच्च वर्ग की जनता अपने शासकों का अनुकरण करती हुई विलासिता के रंग में डूबी हुई थी। मंदिर, तीर्थ और धर्म-स्थान व्यभिचार के केंद्र बन रहे थे... ऐसी स्थिति में निम्न वर्ग के अशिक्षित जन-समुदाय का अनैतिकता, अनाचार और अध:पतन की चरम सीमा तक पहुँचकर मटियामेट हो जाना स्वाभाविक था, किन्तु संत-मत के विभिन्न उन्नायकों ने उन्हें एक ऐसा नेतृत्व प्रदान किया जिससे राष्ट्र का यह बहुसंख्यक वर्ग विनाश से बच सका।"[2] आखिर तड़प रही आत्माओं की पुकार परमात्मा ने सुनी और गुरु नानक देव जी और कई संत-महात्मा हुए जिन्होंने आपनी वाणी द्वारा लोगों को सही मार्ग दिखाया और समाज को उचित रास्ते पर लेकर आए।

गुरु नानक देव जी के प्रकाश से इस्लामी शासन के अत्याचार तो कम नहीं हुए लेकिन सामाजिक बोध और धार्मिक-सहिष्णुता ने करवट जरुर बदली। "एक ओर पददलित निरीह कौम दूसरी ओर हिंसक शासक यह संघर्ष असमानता का धोतक था। इसलिए गुरु साहब के व्यक्तित्व में जो विद्रोह का अंश था, वह दिलेरी तथा पूर्ण शक्ति से उनके साहित्य में व्यक्त हुआ।"[3] गुरु जी ने अपनी वाणी में सदाचार को बहुत महत्त्व दिया कि मनुष्य को एक सदाचारक प्राणी बनना चाहिए। उन्होंने साहित्य को सामाजिक कल्याण का साधन समझकर समाज को उन्नति की राह पर ले जाने के लिए और सदाचार रूप में ऊँचा उठाने के लिए इसका प्रयोग किया। उन्होंने मनुष्य के आचरण को आध्यात्मिक उच्चता में ढालकर और चेतनता की रोशनी में निखार कर निडर और बलवान बनाया। गुरु नानक वाणी में जो प्रमुख सदाचारक गुण बताए गए हैं, वह हैं- शुद्धता, संतोष और ज्ञान एवं विचार। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि इस धरती पर मानवी जीवन की सच्ची नींव सदाचारक आचरण ही है।[4] सदाचार के बिना कोई धर्म संभव नहीं और ना ही इसके बिना नाम की प्राप्ति हो सकती है क्योंकि नाम एक आत्मिक तत्त्व है, एक सुक्ष्म अवस्था है। सदाचारक प्राणी ही नाम का अधिकारी हो सकता है। गुरु जी कहते हैं कि वही मनुष्य नाम द्वारा परमात्मा की भक्ति कर सकता है जो सदाचारक है और अच्छे गुण धारण किए हुए है-

बिणु गुण किते भगति ना होई।।[5]

सत्य को अपने व्यक्तित्व में धारण करना चाहिए क्योंकि यह सर्वोपरि है। सत्य का ही दूसरा रूप 'नाम' है। नाम से ही सभी मूल्यों और गुणों को पैदा किया जा सकता है। नाम का जाप करने से ही अच्छा आचरण धारण होता है-

पाडे ऐसा ब्रह्म बीचारु।।
नामे सुचि नाम पढ़उ।।
नामे चजु-आचार ।।[6]

गुरु जी का उपदेश है कि अच्छे व्यक्तित्व वाले बनो और झुककर जीना ही सभी गुणों और अच्छाईयों का तत्त्व है।

गुरु नानक देव जी ने सदाचारक जीवन पर ज़ोर देते हुए सभी हताश निराश प्राणियों को 'चढ़दी कला' में रहने का उपदेश दिया। 'चढ़दी कला' एक सिध्दांत है, एक जज्बा है, एक मानसिक अवस्था है, जिसको शाब्दिक रूप देना आसान नहीं है। 'चढ़दी कला' गुरु नानक देव जी की बख्शीश है जो उनके महान फ़रमान-'

हुकमि रजाई चलना, नानक लिखिआ नालि'

से शुरू हुआ। 'चढ़दी कला' उस पवित्र और प्रसिध्द दोहे का एक विशेष अंग है, जिससे सिख धर्म की स्थाई और हमेशा रहने वाली व्यक्तिक और सामूहिक, अरदास हर जगह, हर समय हर स्थिति में इस प्रकार की जाती है-

नानक नाम चढ़दी कला,
तेरे भाणे सरबत दा भला।।[7]

इसमें चार संकेत 'नाम', 'चढ़दी कला', 'भाणा' (हुक्म), 'सरबत दा भला', दिए गए हैं, जो जीवन-दर्शन का तत्त्व सार हैं। सिख सदाचार का मूल आधार और सिख व्यक्तित्व का सत्कार भी इसी की उपज है। 'चढ़दी कला' एक ऐसा मुख्य मार्ग है जिसका आधार 'नाम' और 'सिमरन' है। गुरुबाणी में 'एकोंकार' जो 'करता पुरखु' है का वर्णन करते हुए उसके दो विशेष गुण 'निरभउ' और 'निरवैर' बताए गए हैं और कहा गया है कि जो प्राणी ऐसी हस्ती ऐसे परमात्मा की उपासना करता है वह भय रहित हो जाता है, उसे किसी प्रकार का कोई डर नहीं रहता, उसकी सोच साकारत्मक हो जाती है। गुरु रामदास जी की पंक्तियाँ हैं-

जे भुख देहि त इत ही राजा, दुःख विचि सुख मनाई
भाणे ते सभि सुख पावै, संतहु अंते नामु सखाई।[8]

गुरु अर्जन देव जी गर्म तवी पर बैठकर भी यही कह रहे थे कि-

तेरा कीआ मीठा लागै, हरि नामु पदारथु नानकु माँगे।[9]

गुरुबाणी में कई ऐसी पंक्तियाँ हैं जो पढ़ने वाले की मानसिक दशा को साकारात्मक करती हैं। गुरुबाणी को पढ़ने वालों में नया होंसला जागृत होता है और अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए उत्साहित होते हैं। गुरुओं ने जो लिखा उसे अपने जीवन में भी अपनाया और उच्च आचरण के धारणी हुए और सब को अच्छे गुण धारण कर जीवन यापन करने का संदेश दिया। सदैव वे 'चढ़दी कला' में रहे और परमात्मा की रज़ा में रहकर कार्य किए-

किआ कहीऐ, सरबे रहिआ समाइ, जो किछु वरतै, सभ तेरी रजाइ।[10]

अत: हम कह सकते हैं कि समय के साथ-साथ सामाजिक परिस्थितियाँ भी परिवर्तित होती रहती हैं, प्रत्येक प्राणी का जीवन सुख-दुःख का संगम है, मुश्किलों से हारकर बैठना किसी समस्या का समाधान नहीं। गुरु नानक देव जी हमें यह उपदेश देते हैं कि बस अपने मन को शुद्ध रखकर अच्छे कर्म करते रहो, ज्यादा सोच-विचार करने से कुछ नहीं होता परमात्मा है सब करने वाला उसे पूरी मानव जाति की चिंता है। उस परमात्मा के साथ जुड़कर हमें उससे शक्ति हासिल करनी है, जिससे मनुष्य दुःख-सुख और मुश्किल हालातों में भी मुस्कराकर, दृढ़-विश्वास के साथ काम करे और सफलता हासिल करे। सभी शक्तियों का केंद्र परमात्मा है, हमें उसके

[9] वही, पृष्ठ संख्या 394
[10] वही, पृष्ठ संख्या 1328

नाम का जाप कर उस परमात्मा से रोज़ाना जीवन में करने वाले काम और हालतों का सामना करने के लिए शक्ति, हिम्मत माँगनी चाहिए ताकि हम उसके आसरे में अपने रास्ते पर आगे बढ़ते जाएँ। यह एक सबसे अलग, प्रबल, गतिशील और आशावादी शक्ति है। गुरुबाणी द्वारा जो 'चढ़दी कला' का उपदेश दिया गया है इसकी पालना करते हुए हमें हमेशा आशावादी होकर चलना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उद्दत डा. मनमोहन सहगल, गुरु ग्रन्थ साहिब एक सांस्कृतिक सर्वेक्षण, भाषा विभाग, पटियाला, पृष्ठ संख्या 19
2. गणपतिचन्द्र गुप्त, सन्तकाव्य : उद्गम-स्रोत और प्रवृतियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या 238
3. दीवान सिंह, गुरु नानक दर्शन, वारिस शाह फाउंडेशन, अमृतसर, पृष्ठ संख्या 37
4. वजीर सिंह, नानक बाणी चिंतन, लुधियाना लाहौर बुक शॉप, पृष्ठ संख्या 102
5. डा. जोध सिंह, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब (मूल पाठ एवं हिन्दी अनुवाद), द सिक्ख हैरीटेज पब्लिकेशन्स, पटियाला, पृष्ठ संख्या 4
6. वही, पृष्ठ संख्या 355
7. डा. हरनाम सिंह, चढ़दीकला अते चढ़दी कला दे पुंज, धर्म प्रचार कमेटी, अमृतसर, पृष्ठ संख्या 42
8. डा. जोध सिंह, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब (मूल पाठ एवं हिन्दी अनुवाद), द सिक्ख हैरीटेज पब्लिकेशन्स, पटियाला, पृष्ठ संख्या 910
9. वही, पृष्ठ संख्या 394
10. वही, पृष्ठ संख्या 1328